IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रदक्षिणा

डॉ॰ जया शुक्ला

अतिथि व्याख्याता

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

प्रस्तावना: शब्दशास्त्रियों का स्पष्ट मत है कि प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त ही होती है और इसमें इष्ट देवता मध्य स्थान में होते हैं। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार, देवता को उद्देश्य करके दक्षिणावर्त (घड़ी की सुई की भाँति) उनका परिभ्रमण करना प्रदक्षिणा कहलाता है। इसे षोडशोपचार पूजन विधि का अंतिम उपचार कहा गया है।

प्रदक्षिणा: प्रदक्षिणा तथा परिक्रमा शब्द भिन्न हैं। परिक्रमा शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ के अनुसार, परिक्रमा में दिशा निश्चित नहीं होती; दिशाहीन गति होती है। परिक्रम (परि + क्रम) का अर्थ है इधर-उधर घूमना, इच्छानुसार घूमना। "प्रगतं दक्षिणम् इति प्रदक्षिणम्" अर्थात् अपने दक्षिण भाग की ओर दाईं ओर गति करना (दक्षिणावर्त) प्रदक्षिणा है। इस प्रकार प्रदक्षिणा एक सदिश गति है। "प्र" प्रत्यय एवं "दक्षिणा" दो शब्दों के संयोग से बना है, जहाँ "प्र" का अर्थ विशेषतः है और "दक्षिणा" का अर्थ दक्षिण दिशा की ओर प्रमुखता से गति करना। अतः मध्य में देवता और उनके दक्षिण से चलकर वापस पहुँचने की क्रिया ही प्रदक्षिणा है। सायण का कथन है, "दक्षिणा दक्षं उत्साहनं करोति इति दक्षिणा।" दक्ष का अर्थ है निपुण, मानसिक शक्ति। अर्थात् दक्षिणा का अर्थ यजमान को बढ़ाने वाली, यज्ञ कर्म की न्यूनता को पूर्ण करने वाली। दक्षता के लिए पुरस्कृत होना। अतः प्रदक्षिणा लौकिक पूजन विधान एवं यज्ञ कर्म में न्यूनता को पूर्ण कर परिपूर्णता देती है।

"कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च यानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।" यहाँ प्रदक्षिणा के वैशिष्ट्य को शास्त्र उल्लिखित करता है कि एक-एक पद प्रदक्षिणा क्रमशः जन्म-जन्मांतर के पापों का नाश करता है। पृथ्वी सूर्य की प्रदक्षिणा कर ही अनंत सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करती है और तभी सृष्टि का सम्पूर्ण कार्य सुचारू रूप से करती है। सूर्य से शक्ति प्राप्त कर जीवों की सृजनात्मकता संभव होती है। यह पृथ्वी का उदाहरण प्रदक्षिणा द्वारा सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने का है। इसी प्रकार देवता की प्रदक्षिणा अभीष्ट सिद्धि हेतु ऊर्जा प्रदान कर आशीष प्रदान करती है। प्रदक्षिणा आनंद देती है एवं यज्ञकर्म को सफल बनाती है। कहा गया है कि प्रदक्षिणा एक विशेष दक्षिणा है।

"प्रगतं दक्षिणम् इति प्रदक्षिणा" अर्थात् देवता को उद्देश्य करके दक्षिणावर्त भ्रमण करना प्रदक्षिणा है। उस दक्षिणा में अंतर्ज्ञानमय विवेक है जो प्रदक्षिणा ही यज्ञकर्म को सम्पूर्ण करता है। प्रदक्षिणा में दक्षिणावर्त रूप में ही उपचार संभव होता है। प्रदक्षिणा के दक्षिणावर्त होने की क्रिया यज्ञकर्म सफल करती है। प्रदक्षिणा को यज्ञकर्म रूप संज्ञा प्राप्त है। इस तरह

दक्षिणाग्नि यजुर्वेद से उत्पन्न क्रिया शक्ति प्रधान है, जिसका स्थान अंतरिक्ष है। इस क्रिया शक्ति की दिशा दक्षिण है, साथ ही रुद्र देवता की दिशा भी दक्षिण है। तो कह सकते हैं कि यजुः दक्षिणाग्नि से युक्त क्रियात्मक होकर जीवन में शांति, सुख, संतोष प्राप्त करता है। प्रदक्षिणा शब्द में "प्र" प्रत्यय तथा "दक्षिणा" शब्द मिला हुआ है। इन दोनों शब्दों की सामर्थ्य ही यज्ञकर्म की पूर्णता करती है।

प्रदक्षिणा शब्द वेद में "प्रदक्षिणीदभि सोमास इन्द्रम्" (ऋग्वेद 3/32/15) तथा "प्रदक्षिणीदभि गृणन्ति कालवः" (ऋग्वेद 2/43/1), अथर्ववेद में "सर्वं प्रदक्षिणं कृणु यो वरः प्रतिकाम्यः" (अथर्ववेद 2/36/6) व अनेक स्थानों में मिलता है, जिससे वैदिक काल से अपनी अपरिहार्यता सिद्ध करता है प्रदक्षिणा। "प्र" का अर्थ प्रमुखतः या विशेषतः है तो वह विशेष दक्षिणा अर्थात् प्रमुख दक्षिणा कहलाई। अब यह प्रदक्षिणा यज्ञकर्म की पूर्णता या किसी भी प्रकार की न्यूनता को पूर्ण कर यज्ञकर्म या देव पूजा पूर्ण करती है। इसके लिए ब्राह्मण ग्रंथ कहते हैं - "एषा ह वै यज्ञस्य पुरोगवी यद्दक्षिणा।" (गोपथ ब्राह्मण उत्तर 6/15) गोपथ ब्राह्मण की घोषणा के बाद भी यज्ञकर्म की पूर्णता प्रदक्षिणा से कैसे? इसके लिए दक्षिणा शब्द की व्युत्पत्ति व अर्थ को देखना होगा - दक्ष + इनन् = दक्षिण। दक्षिण + टाप् = दक्षिणा।

"दक्षिणा दक्षते समर्धयीति कर्मणः।" (यास्क 1/7) दक्षिणा के विषय में सायण कहते हैं - "दक्षिणा दक्षं उत्साहनं करोति इति दक्षिणा" अर्थात् दक्षिणा उत्साह को बढ़ाने वाली है। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि रासलीला के समय श्रीकृष्ण के दक्षिणांश से प्रदक्षिणा की उत्पत्ति हुई थी। (ब्रह्मवैवर्त पुराण 42/73) सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् कुशलता (क्रिया) का सम्यक् विनियोग ही दक्षिणा है। दक्षिणा को अंतर्ज्ञानमय विवेक शक्ति कहा गया है। संकल्पात्मक यज्ञ में यह दक्षिणा शक्ति दक्षिणावान् को ऋषित्व प्रदान करती है और तब वह ऋषित्व प्राप्त हुआ अपने अंतर्ज्ञानमय विवेक से यज्ञकर्म की न्यूनता को पूर्ण कर देता है। साथ ही यज्ञकर्म पूजा विधान को पूर्णता प्रदान करने में प्रदक्षिणा ही समर्थ होती है। प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त क्यों होती है? यह विचार जब उठता है तो दक्षिणा शब्द का अर्थ पुनः देखें तो पाएंगे कि दक्षिणा का एक अर्थ दक्षिण दिशा एवं दूसरा अनुकूल है।

अब इन अर्थों को लेकर चलें तो वेद यज्ञ वेदी के पूर्व में सौर अग्नि का स्थान मानता है एवं दक्षिण में दक्षिणाग्नि, पश्चिम में गार्हपत्य अग्नि एवं उत्तर में सोम का वास माना गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि दक्षिणा यज्ञ के दक्षिण में रहती है। तब कह सकते हैं कि प्रदक्षिणा करते हैं, वे इसलिए यज्ञ के इन देवताओं को सदा अपने दक्षिण भाग में रखते हैं। दक्षिण भाग मित्र का, वाम भाग की एकाधिकारी पत्नी होती है। तब हम अनुकूल सामंजस्य स्थापित करते हुए कह सकते हैं कि देवता को (अनुकूल रखते हुए) अपने दक्षिण में रखते हुए दक्षिण दिशा से चलकर उत्तर दिशा से होते हुए पुनः अपने उसी स्थान पर आना ही एक प्रदक्षिणा पूर्ण करना है।

अपने इष्ट या देवता के गुणों से प्रभावित, आकृष्ट होकर उनका अनुशीलन कर उस देवता का चिंतन, मनन करते हुए ही प्रदक्षिणा में (दक्षिण) अनुकूल बनाए रखते हैं। यजुर्वेदीय क्रिया शक्ति दक्षिणाग्नि की दक्षिण दिशा से अविद्या को जीतकर इहलोक उत्तर दिशा से सोमदेव के अमृत को प्राप्त कर जीवन रूपी यज्ञ की पूर्ण प्रदक्षिणा है। इस तरह उस इष्ट परम सत्ता पर ध्यान केंद्रित रहे, यही परम यज्ञ की प्रदक्षिणा है।

निष्कर्ष: अंत में, यज्ञकर्म व पूजा-पाठ-उत्सव एक ही हैं। यज्ञकर्म वैदिक स्वरूप एवं पूजा-पाठ आदि लौकिक यज्ञरूप कह सकते हैं। यज्ञकर्म प्रदक्षिणा के बिना पूर्ण नहीं होता। प्रदक्षिणा अंतिम षोडशवाँ उपचार कहा गया है। भारतीय सनातन धर्म में पूजा विधान पंचोपचार या षोडशोपचार द्वारा विहित है। इसमें अंतिम प्रदक्षिणा पूर्णता की ओर ले जाती है। पुराणों एवं वेदों के साथ-साथ लोक में भी अनेक रूपों में प्रदक्षिणा प्राप्त होती है।

संदर्भ सूची:

1. ऋग्वेद - 3/32/15

2. ऋग्वेद - 2/43/1

3. अथर्ववेद - 2/36/6

4. गोपथ ब्राह्मण - उत्तर/6/15

5. यास्क - 1/7

6. ब्रह्मवैवर्त पुराण - 42/73